क्षणिकाएं-

बापू 1,

तस्वीर में जड़े
दीवार पर टंगे बापू
सवाल से अड़े नज़र आते हैं
लोग आते जाते उनसे
आंखे मिलाते कतराते हैं।

2.
लोगों के दिमाग़ में
पहेली से खड़े हैं
सुलझाने में अड़े हैं
क्या छोटे क्या बड़े हैं।

3.
आज भी ज़िंदा है
बापू का फंडा
हथियारों का बाप जैसे
लाठी या डंडा।
.....
राहू जनम से हावी है
'ग्रहचाल टेढ़ी है,
पितर हैं नाराज़'
उसने कहा था।
औरत ने
बरसों पहले पटक दी चालीसा
मयश्रद्धा पढ़ना
फिर से शुरू कर दिया है।
देवताओं को मनाते
साष्टांग करते
गर्दन, कमर, पांव की हड्डियां किलसती हैं।
दर्द से कराहती

औरत

हर बार खुद से झगड़ी है।
'वो देवता ही क्या
जो अदना से मानव को
पूजा को अपनी सताए इतना,
वो ग्रह ही क्या
जो अपनी सत्ता में चूर
सताएं यों अशक्त भक्तों को'
पर डर है कि हारता नहीं,
औरत का सिर
किसके आगे झुकता है
वह नहीं जानती
पर झुकता ज़रूर है।
.....

2.

जल बिन मछली,
डोर से बिछुड़ी पतंग
पर कटी चिरैया
एक तवा जली रोटी
तितली, गाय, छलनी
और न जाने क्या क्या
हर शब्द बयां करते रहे वे
वजूद मेरे
और भूलते रहे अर्थ
मेरे होने के
खोने के।

तुम बोले

औक़ात नहीं मेरी
मैं कहती हूं
औकात बड़ों की बनती है छोटों से ही
गोया कि-

बड़ा बड़ा इसलिए है कि छोटे हैं।
गर छोटे न हों
तो बड़ों के बीच
होगा कोई तो छोटा
कौन जाने वो आप ही हों
इसलिए मेरे भाई
बात औकात की मत कर
औकात नापने लगे घबराकर
ऐसी भी औकात का
होना क्या होना?

.....

मुझे बताओ कि-
हराने की तुम्हारी ज़िद के साथ
कब तक
जूझना होगा मुझे?
इस अंतहीन
आत्महंता आस्था की जंग
तुम जीत नहीं सकते मुझसे
क्योंकि इस युद्ध में
तुम्हें ही तो आधार बनाकर
लड़ रही हूं- नियति से अपनी,
अब मेरी जीत
या हार
होगी तुम्हारी ही
देवता!

.....

खुदा वो बने बैठे हैं

जिन्होंने उन्हें खुदा माना था
रास्ते बदलकर गुम हो गए
एक ही मंज़िल पर जाना था।

वादों की बरसातों को
हमने उनका सच जाना था
वो इंतज़ार में बैठा गए
जिन्हें लौटकर न आना था।

हम शहर के वीरानों में
खोजते थे आबादियां
बेगानी गलियों में यों
भाग्य हमें गंवाना था।

जिनकी बातों में दम होता था
बड़े बेदम निकले वो लोग
यों दाता बन बैठे वो
जिनके हाथ हमारा दाना था।

ज़्ब अपनी हथेलियों में ज़्बातों को हो जाने दे

तू अपना ग़म भुलाकर
कर वो जो तेरे मन में हो
बेख़ौफ़ जी इंसानों सा, होता है जो हो जाने दे।

तू मजहब का दीवाना बन
या मयखाने का परवाना
अंधियारों के नाम खुद को, लौ के जैसा जल जाने दे।

अहसासों के जंगल में
खो जाएं कभी जब सुरख़म पल
यादों की अंगनाई में, पागल मन को हो जाने दे।

तू बंदगी में जी उसी की

उसका ही तू बंदा बन
वो तेरा रहा सदा अब, खुद को उसका बन जाने दे।